



NEERAJ®

D.E.C.E.- 1

बाल देखभाल सेवाओं का संगठन

(Organising Child Care Services)

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sonia Mehendiratta, M.A. (Education), B.Ed.



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

बाल देखभाल सेवाओं का संगठन (Organising Child Care Services)

Question Paper—June-2024 (Solved)	1-3
Question Paper—December-2023 (Solved)	1-3
Question Paper—June-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)	1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-6
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-2

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	बाल्यकाल के अनुभव (The Experience of Childhood)	1
2.	बाल विकास की मूलभूत संकल्पनाएँ (Basic Concepts in Child Development)	5
3.	विकास के सिद्धान्त (The Principles of Development)	9
4.	बच्चों की आवश्यकताएँ और अधिकार (The Needs and Rights of Children)	12
5.	विकास में खेल का महत्त्व (The Importance of Play in Development)	16
6.	जन्मपूर्व विकास और उससे संबंधित देखभाल (Pre-natal Development and Care)	20
7.	शारीरिक, क्रियात्मक और संवेदात्मक विकास (Physical, Motor and Sensory Development)	24
8.	संज्ञानात्मक विकास : विचारशक्ति का आविर्भाव (Cognitive Development: The Emergence of Thought)	28

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
9.	भाषा का विकास : बोलना सीखना (Language Development: Learning to Speak)	31
10.	सामाजिक-भावात्मक विकास : प्रारम्भिक संबंध (Socio-Emotional Development: The Early Relationships)	35
11.	विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल क्रियाएँ (Play Activities for Fostering Development)	40
12.	शारीरिक और क्रियात्मक विकास : बढ़ती हुई गतिशीलता और नियंत्रण (Physical and Motor Development: Increasing Mobility)	44
13.	संज्ञानात्मक विकास : मानसिक संकल्पन और प्रतीकात्मक विचारशक्ति की ओर (Cognitive Development: Towards Mental Representation and Symbolic Thinking)	47
14.	भाषा संबंधी विकास : शब्दों से वाक्यों का प्रयोग (Language Development: From Words to Sentences)	49
15.	सामाजिक-संवेगात्मक विकास : बढ़ते हुए संबंध और स्व का उभरना (Socio-Emotional Development: Expanding Relationships and the Emerging Self)	52
16.	विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल क्रियाएँ (Play Activities for Fostering Development)	56
17.	शारीरिक सुदृढ़ता और समन्वय में सुधार (Physical Growth and Motor Development)	59
18.	संज्ञानात्मक योग्यताओं और संकल्पनाओं का विकास (Developing Cognitive Abilities and Understanding Concepts)	62
19.	भाषायी विकास : शालापूर्व वर्षों में (Enhancing Language Skills)	67
20.	समाजीकरण और पालन-पोषण के तरीके (Social Relationship and Child Rearing)	72
21.	शारीरिक गतिविधियों तथा गतिशीलता के लिए खेल क्रियाएँ (Activities for Movement and Mobility)	79
22.	परिवेश का अन्वेषण (Exploring the Environment)	85
23.	संज्ञानात्मक योग्यताओं और संकल्पनाओं के विकास के लिए खेल क्रियाएँ (Learning Some Concepts)	90

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
24.	भाषायी विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल क्रियाएँ (Furthering Language)	98
25.	फैंटेसी, कहानी सुनाना और नाटकीय खेल (Fantasy, Story-telling and Dramatization)	103
26.	संगीत तथा शारीरिक क्रियाकलाप (Music and Physical Activities)	108
27.	बच्चों के लिए कला संबंधी खेल क्रियाएँ (Art for Children)	112
28.	बच्चों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना (Nurturing Creativity)	117
29.	भारत में बच्चों के लिए देखभाल सेवाएँ (Child Care Services in India)	120
30.	पाठ्यचर्या की योजना बनाना (Planning the Curriculum)	126
31.	केन्द्र स्थापित करना तथा चलाना (Setting up and Running a Centre)	135
32.	परिवार और समुदाय को सम्मिलित करना (Involving the Family and Community)	139
33.	मूल्यांकन (Evaluation)	143
	प्रयोगात्मक कार्यों की नियमावली : परिचय (Rules and Regulations of Practical Activities: An Introduction)	151



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

बाल देखभाल सेवाओं का संगठन
(Organizing Child Care Services)

D.E.C.E.-1

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : प्रश्न सं. 1 अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-I

प्रश्न 1. निम्नलिखित एक शिक्षिका द्वारा सप्ताह के पाँच दिनों के लिए तैयार की गई क्रियाओं की एक अनुसूची है—

समय	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार
प्रातः 9.00 से 9.15 बजे तक	बच्चों का केन्द्र में आना, उनका स्वागत करना, दिन की योजना के बारे में बातचीत करना				
प्रातः 9.15 बजे से 9.45 बजे तक	बाहरी मुक्त खेल	ड्रॉइंग	कहानी सुनाना	'पक्षी' वर्ण्य विषय पर चर्चा	'रंग' वर्ण्य विषय पर खेल-क्रिया (भीतरी)
प्रातः 9.45 बजे से 10.15 बजे तक	बाग की सैर	पेंटिंग	कठपुतली का तमाशा	दी गई वर्क-शीट पर पक्षियों में रंग भरना	आकृतियों का वर्गीकरण करने पर क्रिया (भीतरी)
प्रातः 10.15 बजे से 10.45 बजे तक	अल्पाहार				
प्रातः 10.45 बजे से 11.15 बजे तक	भीतरी मुक्त खेल	चिकनी मिट्टी से वस्तुएं बनाना	बच्चों द्वारा कहानी सुनाना	'पक्षी' वर्ण्य विषय पर कहानी	'विपरीत शब्द' वर्ण्य-विषय पर भीतरी खेल-क्रिया
प्रातः 11.15 बजे से दोपहर 11.45 बजे तक	बाहरी मुक्त खेल	पत्ते से प्रिंटिंग	भूमिका अभिनय	बच्चों का अपने पसंदीदा पक्षी को पहचानना और कुछ वाक्य कहना	'आकृति' वर्ण्य विषय भीतरी खेल क्रिया
प्रातः 11.45 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक	बच्चों की घर वापसी				

(क) क्रियाओं की अनुसूची बनाने के सिद्धांतों के संदर्भ में उपयुक्त अनुसूची का विश्लेषण कीजिए और यह एक उपयुक्त अनुसूची है या नहीं, चर्चा कीजिए।

उत्तर—उपर्युक्त अनुसूची में विभिन्न क्रियाकलापों के तहत खेल संबंधी गतिविधियों को शामिल नहीं किया गया है, इसलिए यह उपयुक्त अनुसूची नहीं है।

इसे भी देखें—अध्याय-30, पृष्ठ-129, 'शालापूर्व बच्चों के लिए अनुसूची'

(ख) सप्ताह के पाँच दिनों के लिए एक वैकल्पिक अनुसूची तैयार कीजिए। आप ऊपर अनुसूची में दी गई क्रियाओं को इसमें शामिल कर सकते हैं।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-30, पृष्ठ-130, 'अर्द्ध-दिवसीय अनुसूची'

(ग) आपने क्रियाओं की जो अपनी अनुसूची तैयार की है, उसका तर्काधार बताइए।

उत्तर—मेरे द्वारा तैयार की गई अनुसूची में विकास के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित कुछ क्रियाएँ हैं, जो बच्चे के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकती हैं।

इसे भी देखें—अध्याय-30, पृष्ठ-131, 'दैनिक अनुसूची में लचीलापन और संरचना'

प्रश्न 2. (क) देखभालकर्ता/शिक्षिका की उन चार मनोवृत्तियों का वर्णन कीजिए जो उसे बच्चों के विकास को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने में सहायता करती हैं।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-11, पृष्ठ-40, 'पालनकर्ता की मनोवृत्तियाँ'

(ख) निम्नलिखित प्रत्येक क्रिया विकास के किस क्षेत्र में बढ़ावा देती है, बताइए। आपके स्पष्टीकरण के लिए पहली क्रिया का उदाहरण दिया गया है—

क्रिया	विकास-क्षेत्र जिसमें बढ़ावा मिलता है
(i) मोती पिरोना	सूक्ष्म-क्रियात्मक विकास
(ii) भागने का खेल	
(iii) आकृति के अनुसार कार्डों को व्यवस्थित करना	
(iv) कहानी कथन	
(v) रंगों को पहचानना	
(vi) बच्चे का अपनी मन-पसंद ड्राइंग बनाना	

उत्तर—

क्रिया	विकास-क्षेत्र जिसमें बढ़ावा मिलता है
(i) मोती पिरोना	सूक्ष्म-क्रियात्मक विकास
(ii) भागने का खेल	शारीरिक तथा सामाजिक विकास

(iii) आकृति के अनुसार कार्डों को व्यवस्थित करना	संज्ञानात्मक विकास
(iv) कहानी कथन	संज्ञानात्मक विकास
(v) रंगों को पहचानना	संज्ञानात्मक विकास
(vi) बच्चे का अपनी मन-पसंद ड्राइंग बनाना	संज्ञानात्मक समन्वयता तथा सूक्ष्म क्रियात्मक विकास

प्रश्न 3. (क) उदाहरण देते हुए शालापूर्व बच्चों (3-6 वर्ष) की विचारशक्ति की कोई पाँच विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-13, पृष्ठ-48, 'पूर्व-संक्रियात्मक अवधि' तथा अध्याय-18, पृष्ठ-62, 'प्रतीकात्मक विचारशक्ति और फैंटेसी'

(ख) बच्चों को सीखने के अनुभव प्रदान करने की योजना बनाते समय भाषण देने की बजाय हमें वास्तविक वस्तुओं का प्रयोग क्यों करना चाहिए या बच्चों को वास्तविक घटनाओं का अनुभव क्यों प्रदान करना चाहिए? वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-22, पृष्ठ-85, 'सीखने के अनुभवों में सुसंगति', पृष्ठ-86, 'मूर्त-अनुभव-सीखने का आधार'

प्रश्न 4. (क) देखभालकर्ता और बच्चे के बीच लगाव का संबंध कैसे विकसित होता है, वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-10, पृष्ठ-36, 'लगाव का विकास', 'शिशु का लगाव'

(ख) 'स्वायत्तता' और 'पहल करने की प्रवृत्ति' का अर्थ स्पष्ट कीजिए और इसका महत्त्व बताइए। बच्चों में यह किस आयु में विकसित होती है, बताइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-15, पृष्ठ-52, 'स्वायत्तता में विकास' तथा अध्याय-20, पृष्ठ-72, 'पहल करने की प्रवृत्ति का विकास'

प्रश्न 5. (क) विकास के किन्हीं दो क्षेत्रों के संदर्भ में 'आनुवंशिकता' और 'परिवेश' बच्चे के विकास को कैसे प्रभावित करते हैं, उदाहरणों सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-3, पृष्ठ-10, 'विकास पर प्रभाव' तथा अध्याय-7, पृष्ठ-27, प्रश्न 2

(ख) खेल की तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-5, पृष्ठ-16, 'खेल क्या है?' 'विकास में खेल की भूमिका'

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रत्येक का मूल्यांकन करते समय आप किन पाँच पहलुओं को ध्यान में रखेंगे, बताइए—

(i) बच्चों की शिक्षिका के साथ अंतर्क्रिया

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-33, पृष्ठ-144, 'बच्चों का मूल्यांकन', पृष्ठ-147, 'कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन'

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

बच्चों के लिए देखभाल सेवाओं का संगठन (Organising Child Care Services)

बाल्यकाल के अनुभव (The Experience of Childhood)



प्रस्तावना

बाल्यावस्था बहुत ही कोमल और बहुमूल्य अनुभव है, जिससे हम सभी गुजरे हैं। अगर आज भी हम बचपन की कुछ घटनाएं याद करें, तो कई धुंधली-सी यादें फिर से तरोताजा हो जाती हैं।

बाल्यावस्था के अनुभवों और भावनाओं को समझना बहुत आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक धर्म में बचपन को सीखने का समय माना जाता है। बच्चों में उत्सुकता और कल्पना शक्ति इतनी तीव्र होती है कि वे जल्दी ही अपने-आपको किसी भी परिवेश में ढाल लेते हैं। वैसे तो बच्चों में कई समानताएं होती हैं, परंतु सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश की भिन्नता के कारण प्रत्येक का बचपन भिन्न होता है।

आर्थिक परिस्थितियों के साथ-साथ माता-पिता का बच्चों के साथ उचित रूप से बिताया गया समय भी बच्चों को आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनने में मदद करता है।

कैसा होता है बचपन?

बचपन भावुक, चुस्त, जिज्ञासाओं से भरा हुआ, भावनाओं से जुड़ा हुआ और कल्पनाओं की उड़ान पर सवार होता है। उस समय बच्चे जल्दी से प्रसन्न और उदास हो जाते हैं। उनके क्यों, कब, कैसे, कहाँ जैसे प्रश्न हमेशा तैयार रहते हैं। इसी से वे सीखते हैं और इसी जिज्ञासा की पूर्ति उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है।

बचपन में खेल के प्रति लगाव बहुत अधिक होता है। उन्हें खेलने के लिए किसी खास खिलौने की आवश्यकता नहीं होती। वे अपनी कल्पना की उड़ान से आलू, टमाटर को गेंद के रूप में और कुर्सी को टेढ़ा करके गाड़ी के रूप में खेल लेते हैं।

बच्चे बड़ों की दुनिया से प्रभावित होकर जल्दी ही उन जैसे बनना चाहते हैं। वे खेलते हुए भी अपने बड़ों की तरह बातचीत व व्यवहार करते हैं।

बच्चों की क्षमताओं व भावनाओं के बारे में कई लोगों की धारणाएँ सही नहीं हैं। वे समझते हैं कि ये बच्चे नासमझ हैं और इन्हें आसानी से बुद्धू बनाया जा सकता है। परंतु ऐसा नहीं है, बच्चा माँ के गर्भ से ही सीखना शुरू कर देता है और चिकनी मिट्टी के समान उसे जैसा माहौल मिलता है, उसी के अनुरूप अपने को ढाल लेता है।

बाल्यावस्था का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

हमारा समाज और कई अन्य कारक हमारे बचपन के अनुभवों को सुनिश्चित करते हैं। जैसे कि एक बच्चा घर की आर्थिक स्थिति ठीक होने की वजह से अच्छे स्कूल में शिक्षा ग्रहण करता है और वहीं दूसरी ओर एक किसान का बेटा घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पिता के साथ खेत में काम करता है।

परिवार व समुदाय के रीति-रिवाज, परंपराएं, नैतिक मूल्य व विश्वास, गांव व शहर का माहौल भी बचपन के अनुभवों को प्रभावित करता है।

2 / NEERAJ : बच्चों के लिए देखभाल सेवाओं का संगठन

लिंग

एक बच्चे का लड़का या लड़की होना भी बचपन के अनुभव को निर्धारित करता है। पालन-पोषण के दौरान उसे किस प्रकार के अवसर व सुविधाएँ मिली हैं यह तथ्य भी उसे आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है।

आज भी कई परिवारों में लड़कों व लड़कियों की परवरिश में फर्क देखने को मिलता है। लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है।

सामाजिक वर्ग

एक बच्चे को किस प्रकार की सुविधाएँ और अवसर उपलब्ध होंगे, यह उसके परिवार के सामाजिक व आर्थिक ढांचे पर निर्भर करता है।

निम्न सामाजिक वर्ग के परिवार

एक निम्न सामाजिक वर्ग इतना पैसा भी नहीं जुटा सकता कि वह अपने बच्चों की बुनियादी जरूरतों को पूरा कर सके। उन्हें जीने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है, तो शिक्षा जैसा शब्द तो उनके लिए व्यर्थ है। इन परिवारों के छोटे-छोटे बच्चे होश संभालते ही माता-पिता की काम में मदद करके जीविका कमाने में लग जाते हैं।

इन बच्चों का बचपन काम के दौरान पत्थर, टहनियों, खाली डिब्बों से खेलते हुए ही बीत जाता है।

मध्यम और उच्च वर्ग के परिवार

आर्थिक स्थिति अच्छी होने के कारण इन परिवारों में बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना अपने जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य समझा जाता है। एक सम्पन्न परिवार में बच्चे को सभी सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। इन्हें आर्थिक साधन जुटाने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता और इनका अधिक से अधिक समय पढ़ने व खेलने में ही बीतता है, ताकि वे आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बन सकें।

बाल-श्रम

निम्न वर्ग के परिवार के बच्चे अस्वस्थ और कठिन व शोषणकारी स्थितियों में कारखाने व फैक्ट्रियों में जोखिम भरे काम करते हैं, जहाँ बदले में उन्हें पर्याप्त मजदूरी भी नहीं मिलती। ये बच्चे एक दिन में औसत 12 से 14 घंटे काम करते हैं। जिन कमरों में वे काम करते हैं, वे खचाखच भरे हुए होते हैं व हवादार नहीं होते। इन बच्चों के हाथ बिना किसी दस्तानों के अम्ल व क्षारीय घोलों में सुबह से शाम तक डूबे रहते हैं, जो उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होते हैं। 6-7 साल काम करने के बाद जब बच्चे 13-14 साल की उम्र में पहुंचते हैं तब वे त्वचा की बीमारियों, एलर्जी व कैंसर से ग्रस्त हो जाते हैं। तमिलनाडू में माचिस उद्योग, जम्मू-कश्मीर में कढ़ाई और अलीगढ़ में ताला उद्योग कुछ ऐसे उद्योग हैं, जहाँ बाल श्रम प्रचलित है।

धर्म

सभी धर्मों ने बच्चों को कोमल, निःस्वार्थी और भगवान् के रूप में माना है, जो किसी भी प्रकार के हेरफेर के बिना अपने

संस्कारों व रीति-रिवाजों को खेल-खेल में अपना लेता है। धर्म दैनिक जीवन से संबंधित नियमों व नैतिक मूल्यों को प्रभावित करता है।

एक हिन्दू समाज में रहने वाला बालक रामायण पाठ, हवन आदि गतिविधियाँ घर में होते हुए देख अपने-आप सीख जाता है। उसे तीर्थ स्थानों व पवित्र चीजों के प्रति आदर करना एक परिवार में रहकर स्वयं ही आ जाता है।

पारिवारिक संरचना और परस्पर संबंध

पारिवारिक संरचना और आपसी संबंध बाल्यावस्था को प्रभावित करते हैं। एक परिवार जहाँ पर माता व पिता दोनों काम पर जाते हैं और पीछे से छोटे बच्चे को दादा-दादी का सहयोग मिल जाता है, तो वह अपने को सुरक्षित समझने लगता है।

एक परिवार जहाँ पर माता व पिता में से एक का अभाव होता है और माता-पिता अकेले ही नौकरी के साथ-साथ बच्चों की देखभाल का उत्तरदायित्व भी निभाते हैं, तो किसी स्थिति में बच्चा जल्दी ही आत्मनिर्भर बनना सीख जाता है। कई बार माता-पिता में से एक का अभाव बच्चे पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, क्योंकि वे एक के अभाव में अपने को अकेला व दूसरों से भिन्न समझने लगते हैं। इसके लिए पिता के अभाव में माँ को अपनी भूमिका व उत्तरदायित्व को अच्छे से निभाना होगा।

अतः यह जरूरी है कि माता या पिता दोनों ही बच्चे के साथ उचित समय बिताएँ, जिसमें उसकी अच्छे से देखभाल करें, उसकी जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए उचित उत्तर दें, उसकी समस्याओं को ध्यान से सुनकर उनका हल ढूँढने का प्रयास करें, बच्चे के साथ सार्थक संवाद स्थापित करें। ऐसा करने में थोड़ा समय भी महत्वपूर्ण होगा।

पारिस्थितिकी संदर्भ

पारिस्थितिकी का अर्थ है, वह भौतिक वातावरण जिसमें व्यक्ति अपना जीवनयापन करता है।

बच्चे अपनी पारिस्थितिक स्थिति के अनुरूप ही कौशल सीखते हैं; जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले बच्चे भेड़ों को चराने ले जाते हैं, वे ऊन बनाना सीख जाते हैं।

रेगिस्तान में रहने वाले बच्चे ऊंट की देखभाल करना सीख जाते हैं व रेत के टीलों को पार करने में माहिर हो जाते हैं।

विभिन्न भौगोलिक स्थानों को ग्रामीण, शहरी व जनजातीय क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है।

शहरों में रहने का अनुभव

शहर का नाम लेते ही हमें ध्यान आता है—घनी आबादी और विविधता। जहाँ शहर में एक तरफ उच्च आय वर्ग के लोग हैं, जो अपनी अच्छी आय के बल पर सभी सुख-सुविधाएँ अर्जित कर सकते हैं। टेलीफोन, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि का प्रयोग करके घर बैठे दुनिया के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। गर्मी में एयरकंडीशनर व रेफ्रिजरेटर का प्रयोग बिना किसी हिचक के कर

सकते हैं। वहाँ बच्चों की शिक्षा के लिए अच्छे से अच्छे स्कूलों की खोज की जाती है, ताकि उनका सर्वतोमुखी विकास हो सके और वे आत्मनिर्भर बन सकें।

दूसरी तरफ शहर में रहने वाला वह गरीब व्यक्ति जो अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अपने बेटे या बेटी को अपने रोजगार में मदद के लिए लगा लेता है, वह लोगों के घर में सफाई करके या चाय की दुकान पर काम करके अपनी जीविका अर्जित करता है।

गांव में रहने का सुख

गांव में आबादी कम होती है, परंतु वहाँ पर अधिकतर बच्चे अपने माता-पिता के साथ व्यवसाय में मदद करते हैं, चाहे वह खेती-बाड़ी का काम हो या मिट्टी के बर्तन बनाना।

यदि पारिवारिक स्थिति अच्छी है, तो बच्चों को स्कूल जाने का समय मिल जाता है। गांव में रहने वाले बच्चों के पास व्यावहारिक ज्ञान (Practical Knowledge) बहुत ही अधिक होता है। वे भले ही Computer या Internet का प्रयोग न कर सकें, परंतु रेडियो या टेलीविजन नेटवर्क के विस्तार से बाहरी दुनिया गांवों तक पहुंच गई है।

दूसरी ओर राजस्थान का भैया गाँव एक ऐसा दूरस्थ गाँव है, जहाँ पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र 60 कि.मी. दूर है और अस्पताल 150 कि.मी. दूर है।

अलग-अलग परिस्थितियों के अनुभव अलग-अलग होते हैं।

जनजातीय क्षेत्र में रहने का अनुभव

भारत में अनेक जनजातियाँ हैं। शहरों और कस्बों के नजदीक रहने वाली जातियाँ काफी हद तक शहरों से प्रभावित हैं और उनमें घुल-मिल गई हैं, परंतु अभी भी कुछ जनजातियाँ बाकी दुनिया से बिल्कुल अलग हैं, जैसे—पहाड़ी मढ़िया जनजाति, जो मध्य प्रदेश के बस्तर जिले में निवास करती है।

पहाड़ी मढ़िया जाति के लिए झूम खेती जीवनयापन का एकमात्र साधन है। भूमि पर सामूहिक स्वामित्व होता है। लोग बाहरी दुनिया पर केवल नमक, मिर्च व तंबाकू के लिए निर्भर हैं। पहाड़ी मढ़िया में विवाह से पूर्व यौन की आज्ञा है। बाल-विवाह बिल्कुल नहीं होता। यहाँ शिक्षित लोगों की संख्या कम है और स्वास्थ्य संबंधी सुविधा की कमी के कारण अस्वस्थता बहुत अधिक है।

राज्य सरकार और स्वैच्छिक एजेंसियों की मध्यस्थता के कारण इनके रहन-सहन में बदलाव आया है। अब वहाँ पर एक अस्पताल, स्कूल, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और उचित दर की दुकान भी है। झूम खेती को भी व्यवस्थित खेती में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि बच्चों में उत्सुकता, अन्वेषण की अभिलाषा, कल्पनाशीलता, वयस्कों की नकल करना आदि

कई गुण सामान्य रूप से पाए जाते हैं। बच्चों के बहुत-से अनुभव सार्वभौम होते हैं फिर भी सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश की भिन्नता के कारण प्रत्येक बच्चे का बचपन भिन्न होता है। आज भी भारत में लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है।

निम्न समाजिक वर्ग के बच्चों को छोटी उम्र में ही जीवन-यापन के लिए जोखिम भरे काम करने पड़ते हैं। वे स्कूल नहीं जा सकते, जबकि दूसरी ओर मध्यम व उच्च वर्ग के बच्चों की सभी मूलभूत आवश्यकताएँ और अभिलाषाएँ अपने-आप ही पूरी हो जाती हैं।

बालक या बालिका को किस प्रकार का पारिवारिक सहयोग मिलता है, यह उसके विकास को प्रभावित करता है। गाँव, शहर तथा जनजातीय क्षेत्रों में बच्चों के व्यवहार भिन्न होते हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. बाल श्रम से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—बाल श्रम शब्द का प्रयोग उन निम्न वर्ग के परिवार के बच्चों के लिए किया जाता है जो कि अस्वस्थ और कठिन व शोषणकारी स्थितियों में कारखाने और फैक्ट्रियों में जोखिम भरे काम करते हैं, जिनका उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है और जहाँ बदले में उन्हें पर्याप्त मजदूरी भी नहीं मिलती। ये बच्चे दिन में 12-14 घंटे काम करते हैं। इन कामों में लगे रहने के कारण ये बच्चे न तो खेल सकते हैं और न ही अपना मनोरंजन कर सकते हैं। तमिलनाडू में माचिस उद्योग, जम्मू-कश्मीर में कढ़ाई उद्योग आदि में बाल श्रम प्रचलित है।

प्रश्न 2. पहाड़ी मढ़िया की जीवन-शैली में बाहरी दुनिया के संपर्क में आने से जो परिवर्तन आए हैं, उनमें से किन्हीं तीन को बताइए।

उत्तर—पहाड़ी मढ़िया जनजाति मध्य प्रदेश के बस्तर जिले में है। राज्य सरकार और स्वैच्छिक एजेंसियों की मध्यस्थता की वजह से पहाड़ी मढ़िया जाति अब बाहरी दुनिया से परिचित हो गई है। इस कारण उनके रहन-सहन में बदलाव आया है।

1. अब वहाँ एक अस्पताल, स्कूल, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और उचित दर की दुकान भी है।

2. झूम खेती को व्यवस्थित खेती में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

3. सौर ऊर्जा का प्रयोग भी कई गांवों में किया जा रहा है।

प्रश्न 3. कोई तीन सामान्य आचरण बताइए जिनसे यह ज्ञात हो कि शहरी बच्चे के अनुभव एक गांव में रहने वाले बच्चे से भिन्न होते हैं।

उत्तर—शहरी बच्चे शहरी जीवन की तेज रफ्तार के अनुरूप ही अपना जीवन जीते हैं, जबकि गांव में जीवन की गति बहुत ही धीमी है।

4 / NEERAJ : बच्चों के लिए देखभाल सेवाओं का संगठन

एक शहरी बच्चे को अखबार, पत्रिकाओं, टेलीविजन, कंप्यूटर, इंटरनेट और किताबों से विविध जानकारी मिल जाती है, जबकि गाँव के बच्चों की जानकारी सीमित होती है।

एक शहरी बच्चे को शहर में अस्पताल, होटल, स्कूल, सिनेमा, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, यातायात के विभिन्न साधन और अन्य कई सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।

प्रश्न 4. अपने अनुभव व स्मरणों में से निम्नलिखित का एक उदाहरण लिखिए :

1. बच्चे में उत्सुकता;
2. बच्चों द्वारा वयस्कों की नकल करना।

उत्तर-1. बच्चे में उत्सुकता-बच्चों को अपने आस-पास की वस्तुओं की खोजबीन करने में रुचि होती है, यही उनके सीखने का एक तरीका है। क्यों, क्या, कब आदि प्रश्न हमेशा तैयार रहते हैं। अपने प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए वे खेलते-खेलते अपने खिलौनों को भी तोड़-मरोड़ कर उन्हें खोल देते हैं, यह जानने के लिए कि यह कैसे चलता है।

2. बच्चों द्वारा वयस्कों की नकल करना-बच्चे बड़ों की दुनिया से आकर्षित होते हैं और जल्दी से बड़ों जैसा बनना चाहते हैं। इसलिए जब बच्चे आपस में खेल रहे होते हैं, तो खासतौर से लड़कियाँ अपने स्कूल की मैडम बनकर दूसरे बच्चों को पढ़ाती हैं जैसा कि उनकी मैडम स्कूल में किया करती है। गृह-कार्य देखना, बच्चों को डांटना या सजा देना या उनसे प्रश्न पूछना आदि में बच्चों द्वारा वयस्कों के कार्यकलापों की झलक साफ दिखाई देती है।

प्रश्न 5. स्कूल की उपस्थिति में निम्न सामाजिक वर्ग के लड़कों और लड़कियों की संख्या में अंतर बताइए।

उत्तर-स्कूल की उपस्थिति में निम्न सामाजिक वर्ग इस बात के लिए तैयार नहीं होता कि उसका बच्चा काम में मदद करके जीविका कमाने के बजाय स्कूल जाए। फिर भी अगर बड़ा भाई पिता की मदद कर रहा है, तो छोटे भाई को स्कूल जाने की अनुमति मिल जाती है, जहाँ पर उसे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त होती है, परंतु लड़की को कभी नहीं, क्योंकि माता-पिता की अनुपस्थिति में छोटी लड़की का एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व घर चलाना और छोटे बच्चे की देखभाल करना है। इन परिवारों में लड़कों को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

प्रश्न 6. वे कार्य बताइए जो बच्चे अपने परिवार की मदद के लिए करते हैं।

उत्तर-मध्यम या उच्च वर्ग के परिवार के बच्चे तो अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूलों में जाते हैं और खाली समय में घर में छोटे-बड़े काम करके परिवार की मदद करते हैं, परंतु निम्न वर्ग के बच्चों को होश संभालते ही अपनी जीविका के लिए माता-पिता के काम में मदद करनी पड़ती है या फिर बाल-श्रम के रूप में शोषणकारी परिस्थितियों में काम करना पड़ता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. गाँव में रहने वाले बच्चों के पास अत्यधिक होता है।

- | | |
|----------------------|-----------------------|
| (क) व्यावहारिक ज्ञान | (ख) तकनीकी ज्ञान |
| (ग) तार्किक ज्ञान | (घ) इनमें से कोई नहीं |

उत्तर-(क) व्यावहारिक ज्ञान।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से 'भैया' गाँव स्थित है-

- | | |
|------------------|--------------|
| (क) उत्तर प्रदेश | (ख) राजस्थान |
| (ग) हरियाणा | (घ) पंजाब |

उत्तर-(ख) राजस्थान।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से पारिवारिक संरचना और आपसी संबंध किसको प्रभावित करते हैं?

- | | |
|-----------------|-----------------------|
| (क) बाल्यावस्था | (ख) किशोरावस्था |
| (ग) यौवनावस्था | (घ) इनमें से कोई नहीं |

उत्तर-(क) बाल्यावस्था।

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से पहाड़ी मढ़िया जनजाति है-

- | | |
|------------------|-----------------|
| (क) उत्तर प्रदेश | (ख) राजस्थान |
| (ग) हरियाणा | (घ) मध्य प्रदेश |

उत्तर-(घ) मध्य प्रदेश।

प्रश्न 5. पहाड़ी मढ़िया जनजाति का जीवनयापन का प्रमुख साधन है-

- | | |
|----------------|-------------------|
| (क) झूम खेती | (ख) पशुचारण |
| (ग) शिकार करना | (घ) उपर्युक्त सभी |

उत्तर-(क) झूम खेती।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से माचिस उद्योग में बाल श्रम किस राज्य में प्रचलित है?

- | | |
|--------------|-----------------|
| (क) तमिलनाडु | (ख) राजस्थान |
| (ग) हरियाणा | (घ) मध्य प्रदेश |

उत्तर-(क) तमिलनाडु।

प्रश्न 7. निम्नलिखित में से कढ़ाई उद्योग में बाल श्रम किस राज्य में प्रचलित है?

- | | |
|------------------|-----------------|
| (क) तमिलनाडु | (ख) राजस्थान |
| (ग) जम्मू-कश्मीर | (घ) मध्य प्रदेश |

उत्तर-(ग) जम्मू-कश्मीर।

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से प्रत्येक बच्चे का परिवार किस कारण प्रभावित होता है?

- | |
|-------------------------------|
| (क) भौगोलिक परिवेश |
| (ख) आर्थिक परिवेश |
| (ग) सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश |
| (घ) इनमें से कोई नहीं |

उत्तर-(ग) सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश।

प्रश्न 9. बच्चे के पालन-पोषण में कौन-सा कारक प्रमुख भूमिका निभाता है?

- | | |
|------------|-----------------------|
| (क) बुद्धि | (ख) धर्म |
| (ग) लिंग | (घ) शारीरिक स्वास्थ्य |

उत्तर-(ग) लिंग।

प्रश्न 10. मध्यम और उच्च सामाजिक वर्ग के बच्चों द्वारा जीवन के किस पहलू को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है?

- | | |
|-------------|-----------------------|
| (क) मित्रता | (ख) शिक्षा |
| (ग) कार्य | (घ) इनमें से कोई नहीं |

उत्तर-(ख) शिक्षा।

प्रश्न 11. बाल श्रम और बाल श्रम के बीच मुख्य अंतर क्या है?

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| (क) शिक्षा भागीदारी | (ख) माता-पिता का प्यार |
| (ग) काम करने की स्थितियाँ | (घ) सामाजिक वर्ग |

उत्तर-(ग) काम करने की स्थितियाँ।